श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीहनुमते नमः

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः

जगद्गुरुश्रीसदानन्दाचार्यप्रणीतः

वेदान्तसारस्तवः

गङ्गाधरं गुरुं नत्वा बोधायनं च राघवम् ।
अहं करोमि वेदान्तसारस्तवं सुखावहम् ॥१॥

सर्वेश्वर श्रीसीतारामाय नमः

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

प्रणीत प्रकाश

सीतारामसमारभ्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

श्रीसम्प्रदाय-श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के ग्यारह वें आचार्य देशिक सम्राट् जगद्गुरु श्रीसदानन्दाचार्यजी का समय विक्रमपूर्व ३३७-८० है । आपके श्रीराघवांघ्रिवर्णन श्रीबोधायनपंचक श्रीरामयज्ञ पद्धति वेदान्तसारस्तव प्रभृति कई तात्विक प्रबन्ध हैं । उनमें से यह दार्शनिक जगत में ख्यात नाम स्तव है । संस्कृत भाषा से प्रायः अबोध साधकों के लाभार्थ इसे प्रकाश-हिन्दी के साथ अति संक्षिप्त रूप से प्रकाशित किया जा रहा है-

चिताऽचिताविष्टाय सूक्ष्मयाऽसूक्ष्मयाऽथ च ।
कार्यकारणरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥२॥
चिदचित्तत्त्वयोरीशशरीरत्वं श्रुतं श्रुतौ ।
चिदचित्तत्त्वदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥३॥

मैं मेरे दीक्षा एवं शिक्षा गुरु जगद्गुरु श्रीगंगाधराचार्यजी महर्षि श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन एवं अपने आराध्य देव परब्रह्म श्रीराघवजी को सादर नमनकर साधकों को सुखप्रदान करनेवाला वेदान्तसारस्तव नामक स्तव वनाता हूं ॥१॥

सूक्ष्म चित् एवं अचित् से विशिष्ट अर्थात् सृष्टि से पूर्वावस्था में स्थित नाम एवं रूप के विभाग से रहित और स्थूल चित् एवं अचित् से विशिष्ट यानी सृष्टि कालिक नाम और रूप के योग्य स्थूल चिदचिद्विशिष्ट अर्थात् सूक्ष्मचित् अचित् और स्थूलचित् अचित् रूप अपृथक् सिद्ध विशेषणों से युक्त एवं कार्य तथा कारणस्वरूपं सर्वाधार एवं सर्वस्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को मैं वार वार सादर नमस्कार करता हूं ॥२॥

श्रुतिमें जिन परब्रह्म श्रीरामजी का वर्णन चित् एवं अचित् तत्त्व के ईश्वर एवं शरीर के रूप में वर्णन है ऐसे चित् और अचित् तत्त्व के देह स्वरूप सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी को अनेकवार सादर नमस्कार है ॥३॥

जीवात्मा चित् पदार्थो हि मतः प्राज्ञैश्चिदादिषु ।
तादृगात्मशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥४॥

देहादिकं हि जीवस्य जीवोदेहादिकं न तत् ।
देहाद्यनात्मदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥५॥

ज्ञानानन्दस्वरूपस्य ज्ञानाधारस्य चात्मनः ।
ईशिणे शेषिणे धर्त्रे श्रीरामाय नमोनमः ॥६॥

हृद्यन्तर्ज्योतिरित्येवं जीवस्याऽजडताश्रुता ।
अजडात्मशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥७॥

चित् पदार्थोमें जीवात्मा ही चित् चेतन पदवाच्य है ऐसा वेदतत्व के अनुसन्धाता प्राज्ञ जनों ने माना है ऐसे चित् पदवाच्य जीवात्मा शरीर वाले सर्व शरीरी श्रीरामजी को वार वार नमन है ॥४॥

जो सभी जीवों के देह आदि के रूप में होते हुये भी जो जीवों के देह आदि साधन के रूपमें नहीं हैं प्रति ज़ीवों से सर्वथा भिन्न हैं ऐसे देहादिकों से अन्यत्वेन स्थितात्म देह स्वरूप वाले परेश श्रीरामजी को सतत नमन है ॥५॥

जो सत् चित् ज्ञान एवं आनन्द स्वरूप हैं तथा ज्ञान के आधार हैं ऐसे जीवात्माओं के नियमन कर्ता ईश्वर जीवों के शेषी एवं जीवों की धारण करवनेवाले सर्वाधार स्वरूप श्रीरामजी को वार वार नमन है ॥६॥

हृदि अन्तर्ज्योति इत्यादि यानी जीवात्माओं के अन्तःकरण में परम ज्योति प्रकाशित रहता है आदि वेद-

कृतनाशात् त्वनित्यत्वेऽकृतागमात् तथात्मनः ।
स नित्यस्तच्छरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥८॥
विभुत्वे चात्मनो न स्युरुत्क्रान्तिगमनादयः ।
सोऽणुस्तद् देहिने तस्य श्रीरामाय नमोनमः ॥९॥

वाणी से नियत होता है कि जीवात्मा अजड पदार्थ-चेतन तत्त्व है ऐसे अजडात्म शरीर वाले सर्वशरीरी श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥७॥

जीवात्माओं को अनित्य मानने से कृतनाश यानी जीवों से सम्पादित कर्मों का कर्मफल भोग के विना ही नाश एवं अकृताभ्यागम यानी अपने से असम्पादित कर्मों का आगम-उपभोग आदि दोषों के अनुगम होने से इन दोषों को दूर करने के लिये शास्त्रों से जीवात्मा नित्यत्वेन नियत है ऐसे नित्यात्म शरीररूप श्रीरामजी को अनेक वार नमन है ॥८॥

जीवात्माओं को विभु-व्यापक मानने पर वेदादि शास्त्र प्रतिपादित जीवों के उत्क्रान्ति-उत्क्र मणगति-जाना आगति-आजाना आदि क्रिया कलाप सम्भव नहीं अतः शास्त्रों ने जीवों को अणु माना है ऐसे अणु स्वरूप जीवों के देही सर्वाधार सर्वस्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को सर्वदा नमन करता हूँ ॥९॥

व्यापक ज्ञानतो वेत्ति जीवोऽणुः स्वसुखादिकम् ।
अणुजीवशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥१०॥
देहमानात्मनो न स्यात् प्रवेशोऽल्पतनौ वरम् ।
ततश्चाण्वात्मदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥११॥
'सुखी दुःखी'ति भेदेहि सर्वात्मैक्ये भवेन्नतत् ।
मिथोभिन्नात्मदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥१२॥

व्यापक धर्मभूत ज्ञान के द्वारा अणुरूप जीवत्मा अपने शरीर व्यापी सभी सुखों एवं दुःखों को जानलेता है ऐसे अणुरूप जीवात्मा स्वरूप शरीरवाले परेश श्रीरामजी को अनन्त वार नमन है ॥१०॥

जीवात्माओं का परिमाण देहों के परिमाण के समान मानने पर अति छोटे शरीर में प्रवेश असम्भव है जो कि छोटे बड़े सभी शरीर में जीवों का प्रवेश अवाधगति से होता है अतः जीवात्माएं अणु परिमाण वाले हैं ऐसे अणुरूप जीवात्मा शरीर वाले सर्व व्यापक श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥११॥

मैं सुखी हूँ मैं दुःखी हूँ या यह सुखी है यह दुःखी है इत्यादि व्यवहार सभी आत्माओं को एक मानने पर कथमपि नहीं हो सकता है यानी एक काल में सुख दुःख का व्यवहार सम्भव नहीं हो सकता है जीवात्माओं को एक मानने पर अतः परस्पर में जीवात्माएं भिन्न भिन्न हैं ऐसे परस्पर में विभिन्नात्म स्वरूपदेह वाले सर्वगत पर-

आत्मपरात्मनोर्नैक्यं देहदेहि स्वरूपयो: ।
स्वभिन्नात्मशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥१३॥
'ममैवांश' इति प्रोक्त्ता जीवस्य चेश्वरांशता ।
ततो जीवांशिने नित्यं श्रीरामाय नमोनमः ॥१४॥
फलाशया कृतं भुङ्क्ते कर्मबद्धो हि चेतनः ।
बद्धजीवशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥१५॥
जीवोरामस्य सद्भक्तिं कृत्वा बन्धाद् विमुच्यते ।
मुक्तजीवशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥१६॥

ब्रह्म श्रीरामजी को अनन्त वार सादर दण्डवत प्रणाम है।१२।

देह जीवात्मा के शरीर में देही के स्वरूप में स्थित परमात्मा एवं जीवात्मा में कथमपि एकता नहीं हो सकती है अतः अपने से भिन्नतया स्थित जीवात्मा के शरीर स्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को सर्वदा नमन करता हूँ ॥१३॥

यह सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है इसप्रकार गीता में प्रतिपादन किया गया है अतः जीवात्मा के अंशी स्वरूप से प्रख्यात परेश श्रीरामजी को सदा सादर नमस्कार करता हूँ ॥१४॥

यह चेतन जीवात्मा फल की आशा से किंये गये अपने ही कर्म से आबद्ध होकर कर्मफलों को भोगता है ऐसे बद्ध जीव शरीर वाले परपुरुष श्रीरामचन्द्रजी को सदा नमस्कार है ॥१५॥

जीवात्मा सर्वशरण्य श्रीरामजी की अव्यभिचारिणी

हनुमदादयो नित्यमुक्ता बद्धा भवन्ति न ।
नित्यमुक्तशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥१७॥
ज्ञानहीनं त्वचित् तत्त्वं प्राज्ञवर्यैः प्रकीर्तितम् ।
अचित्तत्त्व शरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥१८॥
ज्ञानं प्रकाशरूपं खल्वनुकूलं च सर्वथा ।
तादृग् ज्ञानस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥१९॥

रूपा भक्ति का आश्रय लेकर स्वकृत कर्म बन्धन से विमुक्त हो जाता है ऐसे मुक्त जीव शरीर वाले सर्वसाधक तारक श्रीरामजी को सादर नमन है ॥१६॥

श्रीहनुमानजी आदि नित्य मुक्त जीव हैं वे कभी भी बद्ध नहीं होते हैं ऐसे नित्य मुक्त जीव शरीर वाले सर्व स्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को सर्वदा सादर दण्डवत प्रणाम है ॥१७॥

अचित् तत्त्व ज्ञान हीन-ज्ञान से रहित है ऐसा शास्त्र रहस्यज्ञ प्राज्ञ-विवेकी श्रेष्ठ साधकों ने कहा है ऐसे अचित् तत्त्व रूप शरीरवाले सर्वव्यापक श्रीरामजी को सर्वदा नमन है ॥१८॥

शास्त्र रहस्यज्ञ साधकों का निर्णय है कि ज्ञान प्रकाश स्वरूप होता है एवं वह नियत रूप से सभीको अनुकूल भी होता है ऐसे ज्ञान रूप श्रीरामचंन्द्रजी को वार वार नमन है ॥१९॥

शुद्धसत्त्वमचित्तत्त्वं शुद्धसत्त्वाश्रयोऽजडम् ।
शुद्धसत्त्वशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥२०॥
सर्वेभ्यो नित्यधामभ्यः साकेतो हि परात्परः ।
श्रीसाकेताधिनाथाय श्रीरामाय नमोनमः ॥२१॥
प्रकृतिः सविकाराऽचिच्छ्रिता समैस्त्रिभिर्गुणैः ।
जड़प्रकृतिदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥२२॥

"आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्" "तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः" इत्यादि वेदवचनों के अनुसार परात्पर दिव्यधाम श्रीसाकेत के नाम से प्रसिद्ध शुद्ध सत्व अचित् तत्त्व यानी ज्ञान विरहित तत्त्व है वह शुद्ध सत्व अजड़ यानी स्वत प्रकाश्य तत्त्व है ऐसे शुद्ध सत्व रूप शरीरवाले सर्वमय श्रीरामजी को वार वार नमन है ॥२०॥

वैकुण्ठ लोगोक आदि नित्य धामों से सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी का दिव्यधाम श्रीसाकेत धाम परात्पर है- श्रीरामजी के धाम के सर्वापेक्षया परत्व के संदर्भ में **'परात्पर श्रीरामधामवर्णन' 'श्रीरामप्राप्तिपद्धति'** प्रभृति प्रबन्धों के मेरी टीकाओं का अनुसन्धान करें ऐसे श्रीसाकेतधाम के अधिनायक श्रीरामचन्द्रजी को सर्वदा सादर प्रणाम करता हूँ ॥२१॥

प्रकृति अचित् तत्त्व है एवं स्वरूप तथा स्वभाव से विकारशील है और वह सत्वगुण रजोगुण एवं तमोगुणरूप

विकारः प्रकृतेराद्यो महान् स त्रिविधः स्मृतः ।
महत्तत्त्वशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥२३॥
महत्तत्त्वविकारः खल्वहङ्कारस्त्रिधा मतः ।
अहङ्कारशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥२४॥
सात्विकाहङ्कृतिर्हेतुरिन्द्रियाणां बुधैर्मतः ।
सर्वेन्द्रियशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥२५॥
तामसाहङ्कृतिजानि तन्मात्रभूतकानि हि ।
तन्मात्रभूतदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥२६॥

सभी गुणों से समावृत है ऐसे जड़ प्रकृति देहवाले श्रीरामजी को भूयोभूयः नमन है ॥२२॥

प्रकृति का प्रथम विकार महान्-महत्तत्त्व है वह सत्त्व रज एवं तम के भेद से तीन प्रकार का कहा गया है ऐसे महत्तत्त्व शरीरवाले श्रीरामचन्द्रजी को सादर नमस्कार है ॥२३॥

महत्तत्त्व का विकार अहंकार है जो महत्तत्त्व के सत्व रज एवं तम गुण वाला तीन प्रकार का माना गया है ऐसे अहंकार शरीरवाले सर्वमय श्रीरामजी को सदा नमन है ।२४।

सात्विक अहंकार ही पाँच ज्ञानेन्द्रिय पाँच कर्मेन्द्रिय एवं ग्यारहवां इन्द्रिय मनका भी कारण है ऐसा शास्त्र तत्त्वज्ञों ने माना है ऐसे सभी इन्द्रिय रूप शरीरवाले श्रीरामजी को नमन है ॥२५॥

तामस अहंकार से शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पाँच

राजसाङ्कृतिः कार्ये तूभयोः सहकारिणी ।
तदहङ्कारदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥२७॥
तामसाहङ्कृतेर्जातं तन्मात्रं शब्दसंज्ञकम् ।
शब्दतन्मात्रदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥२८॥
जायते शब्दतन्मात्रादाकाशमवकाशदम् ।
आकाशभूतदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥२९॥

तन्मात्रायें एवं इन पाँच तन्मात्राओं से पृथिवी अप् तेज वायु एवं आकाश ये पाँच महाभूत उत्पन्न होते हैं ऐसे पंच तन्मात्रा एवं पंच महाभूत शरीर वाले सर्वस्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को अनन्त वार नमस्कार हो ॥२६॥

सत्व गुण से एकादश इन्द्रिय उत्पन्न होते हैं तमो गुण से पंच तन्मात्रायें उत्पन्न होती हैं इन दोनों के कार्यों में राजस अहंकार सहकारी कारण होता है यानी राजस अहंकार से किसी की भी उत्पत्ति नहीं होती है यह दोनों का सहायक मात्र है ऐसे राजस अहंकार देहवाले परेश श्रीरामजी को सतत नमस्कार है ॥२७॥

राजस अहंकार सहकृत तामस अहंकार से शब्द तन्मात्रा उत्पन्न हुई ऐसे शब्द तन्मात्रा शरीरवाले श्रीरामजी को नमस्कार है ॥२८॥

शब्द तन्मात्रा से अवकाश अर्थात् संचरण के लिये पर्याप्त स्थान वाला तत्त्व आकाश उत्पन्न हुआ ऐसे आकाश रूप महाभूत देहवाले श्रीरामजी को नमन हो ॥२९॥

जातं चाकाशभूताद्धि तन्मात्रं स्पर्शसंज्ञकम् ।
स्पर्शतन्मात्रदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥३०॥
जातं च स्पर्शतन्मात्राद्भूतं हि वायुसंज्ञकम् ।
वायुभूतशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥३१॥
जायते वायुभूताद्धि तन्मात्रं रूपसंज्ञकम् ।
रूपतन्मात्रदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥३२॥
तेजोभूतं समुद्भूतं तन्मात्राद् रूपसंज्ञकात् ।
तेजोभूतशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥३३॥

शब्द तन्मात्रा संबलित आकाश नामके महाभूत से स्पर्श तन्मात्रा की उत्पत्ति होती है ऐसे स्पर्श तन्मात्रा देहवाले श्रीरामजी को नमन है ॥३०॥

स्पर्श तन्मात्रा से वायु नामक महाभूत उत्पन्न हुआ ऐसे वायु भूत शरीरवाले परेश श्रीरामचन्द्रजी को अनेक वार नमस्कार है ॥३१॥

स्पर्श तन्मात्रा संबलित वायु महाभूत से रूप नामक तन्मात्रा की उत्पत्ति होती है ऐसे रूप तन्मात्रा देहवाले श्रीरामजी को नमस्कार है ॥३२॥

रूप नामक तन्मात्रा से तेज नामक महाभूत उत्पन्न हुआ ऐसे तेजोभूत शरीरवाले श्रीरामचन्द्रजी को अनेकश नमस्कार है ॥३३॥

तेजसश्च समुद्भूतं तन्मात्रं रससंज्ञकम् ।

रस तन्मात्रदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥३४॥

समुद्भूतं जलं भूतं तन्मात्राद् रससंज्ञकात् ।

जलभूतशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥३५॥

सञ्जातं जलभूताद्धि तन्मात्रं गन्धसंज्ञकम् ।

गन्धतन्मात्रदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥३६॥

पृथ्वीभूतं समुद्भूतं तन्मात्राद् गन्धसंज्ञकात् ।

पृथ्वीभूतशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥३७॥

रूप तन्मात्रा संबलित तेज महाभूत से रस नामक तन्मात्रा उत्पन्न हुई ऐसे रस तन्मात्रा देहवाले श्रीरामजी को वार वार नमन है ॥३४॥

रस नामक तन्मात्रा से जल नाम वाला मंहाभूत उत्पन्न हुआ एतादृश जलभूत शरीर वाले श्रीरामचन्द्रजी को अनन्त वार नमन है ॥३५॥

रस तन्मात्रा संबलित जल महाभूत से गन्ध नामक तन्मात्रा उत्पन्न हुई तादृश गन्ध तन्मात्रा देहवाले श्रीरामजी को वार वार नमन हो ॥३६॥

गन्ध नामक तन्मात्रा से पृथिवी नामक महाभूत उत्पन्न हुआ है तादृश पृथिवी भूत शरीर वाले परपुरुष श्रीरामजी को नमस्कार है ॥३७॥

पञ्चीकृतैश्चभूतैर्हि सृजत्यण्डानि राघवः ।

ब्रह्माण्डवृन्ददेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥३८॥

पञ्चीकृत भूतों से परब्रह्म श्रीराघवजी अनेक ब्रह्माण्डों का सृजन करते हैं एतादृश अनन्त ब्रह्माण्ड देहवाले श्रीराघवजी को अनन्त वार मेरा नमस्कार हो । पञ्चीकरण प्रक्रिया का निरूपण जगद्गुरु श्रीश्रियानन्दाचार्यजी ने निम्न रूपसे किया है–

"प्रत्येकस्य च भूतस्य रामेणार्धद्वयं कृतम् ।

एकैकार्धचतुर्थांशाः स्वेतरार्धेषु योजिताः ॥

पञ्चीकृचेषु भूतेषु यदर्धं तस्य नाम तत् ।

पञ्चीकृतैश्चभूतैश्च रामश्चाण्डं ससर्ज हि ॥"

अर्थात् सर्वेश्वर श्रीरामजी ने पृथिवी अप् तेज़ वायु एवं आकाश इन पाँच महाभूतों के समान दो दो अर्ध भाग किये अनन्तर प्रत्येक भूत के एक एक अर्ध भाग के समान चार चार भाग करके इतर भूतों के शेष आधा भाग में मिला देने पर पाँचों भूतों में पाँचों भूतों का संमिश्रण हो जाता है इस संमिश्रण प्रक्रिया को पञ्चीकरण प्रक्रिया कहते हैं । पर यहाँ यह ध्यान रहे मिश्रित पाँचों भूतों में जिसका आधा भाग होता है वह भूत उसी नाम से व्यवहृत होता है । पूर्वोक्त प्रक्रिया से पञ्चीकृत भूतों से परब्रह्म श्रीरामजी ने ब्रह्माण्ड की रचना की है ॥३८॥

नित्यलीलाविभूत्योश्च स्वामी रामः परात्परः ।
विभूतिद्वयदेहाय श्रीरामाय नमोनमः ॥३९॥
सत्वाद्यनाश्रयः कालः प्रकृतिं विकरोति हि ।
जडकालशरीराय श्रीरामाय नमोनमः ॥४०॥
सत्यस्य जगतश्चास्य सृष्टिस्थित्यन्तहेतवे ।
सेतवे च भवाम्भोधेः श्रीरामाय नमोनमः ॥४१॥
उपादानं निमित्तं च सत्यस्य जगतोऽस्य यः ।
परस्मै ब्रह्मणे तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥४२॥

परात्पर परब्रह्म श्रीरामजी ही नित्य विभूति-त्रिपाद विभूति श्रीसाकेत एवं लीलाविभूति-एक पादविभूति मर्त्य लोक के भी स्वमी एक मात्र नियन्ता हैं एतादृश दोनों विभूति देहवाले सर्वव्यापक श्रीरामजी को सर्वत सर्वतोभाव से नमस्कार है ॥३९॥

सत्व रज एवं तम गुणों का अनाश्रयभूत काल तत्त्व के अनन्तर प्रकृति तत्त्व उत्पन्न होता है एतादृश जडात्मक काल शरीरवाले श्रीरामचन्द्रजी को अनेक वार सादर नमस्कार है ४०

इस सत्य जगत् के सृष्टि पालन एवं संहार के निमित्त एवं उपादान कारण और संसार रूप समुद्र से पार उतारने के लिये सेतु श्रीरामचन्द्रजी को सतत नमस्कार है ॥४१॥

जो इस परिदृश्यमान सत्य जगत् के निमित्त कारण एवं उपादान कारण भी स्वयं ही हैं ऐसे परात्पर ब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार हो ॥४२॥

कर्मादिकानधीनो हि सृष्ट्यादिकं करोति यः ।
सङ्कल्पमात्रतस्तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥४३॥
शरीरद्वारिका रामे विश्वोपादानता ततः ।
निर्विकारस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥४४॥
जीवकर्मानुसृत्यैव रामः सृष्टिं करोति हि ।
अक्रूराविषमायातः श्रीरामाय नमोनमः ॥४५॥
प्रयोजनं हि सृष्ट्यादेर्लीला रामस्य सम्मता ।
चित्रलीलाविधात्रे च श्रीरामाय नमोनमः ॥४६॥

जो सर्वेश्वर श्रीरामजी किसी भी प्रकार के कर्मों के अधीन हुये विना ही सर्वतन्त्र स्वतन्त्र रूपसे अपने संकल्प मात्र से अनन्त ब्रह्माण्डों के सृष्टि पालन तथा संहार करते हैं उन सर्व कर्ता श्रीरामचन्द्रजी को अनेकश नमस्कार है ॥४३॥

चित् जीव एवं अचित् प्रकृति रूप विशेषणभूत शरीर के द्वारा ही श्रीरामजी में विश्व की उपादान कारणता है इस लिये सदा निर्विकार रूपसे रहनेवाले सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी को सादर नमन है ॥४४॥

सर्व सृष्टि कारक श्रीरामचन्द्रजी जीवों के पूर्व कृत कर्मों का अनुसरण करके उन कर्मानुसार ही सृष्टि करते हैं अतः सुखी दुःखी मूढ़ आदि विसम सृष्टि करने का वैसम्य-विसम नैर्घृण्य-दया हीनता क्रूरता आदि दोषों से रहित सर्व कारक श्रीरामजी को नमस्कार है ॥४५॥

इस सृष्टि स्थिति एवं संहार का प्रयोजन सर्व कर्ता

दोषाणां च विरोधीयस्तेजोवत् तमसः खलु ।
तस्मै हि दोषशून्याय श्रीरामाय नमोनमः ॥४७॥
परिच्छिन्नो न देशेन न कालेन न वस्तुना ।
यस्तस्मै खल्वनन्ताय श्रीरामाय नमोनमः ॥४८॥
नित्याय चेतनायाथ विभवे चाजडाय हि ।
स्वामिने च स्वतन्त्राय श्रीरामाय नमोनमः ॥४९॥

श्रीरामचन्द्रजी की लीला-बालकों का खैल के समान ही शास्त्रों के सार रूप में माना गया है, इस विषय की विशेष जानकारी के लिये श्रीआनन्दभाष्य का भाष्यदीप तथा मेरी प्रकाश टीका का अनुसन्धान करें एतादृश चित्र-विचित्र-विविध लीला करने वाले सर्व सर्जक श्रीरामजी को वार वार नमस्कार है ॥४६॥

जो अन्धकार एवं प्रकाश के समान सभी दोषों के पूर्णतः विरोधी हैं ऐसे सभी दोषों से शून्य सर्व दोष रहित श्रीरामजी को नमस्कार है ॥४७॥

जो श्रीरामचन्द्रजी देश काल एवं वस्तु-किसी पदार्थ से परिच्छिन्न यानी मापे नहीं जा सकते हैं अर्थात् इन सभी के परिमाण से पर हैं एतादृश अनन्त स्वरूप वाले श्रीरामजी को वार वार नमस्कार है ॥४८॥

जो नित्य हैं चेतन हैं अजड़ एवं सर्वव्यापक हैं और सर्वतन्त्र स्वतन्त्र तथा सभी के स्वामी-नियमन कर्ता और सर्वाराध्य हैं एतादृश श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥४९॥

स्वाभाविकाश्च निस्सीमा ज्ञानशक्त्यादयश्च ये ।
गुणानामब्धये तेषां श्रीरामाय नमोनमः ॥५०॥
प्राकृतगुणशून्यत्वाद् दिव्यगुणान्वयाच्च हि ।
सगुणाऽगुणरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥५१॥
अज्ञादीनां हितार्थं हि यो ज्ञानादिगुणान् खलु ।
विभर्त्त्यहर्निशं तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥५२॥
धारयति श्रितेभ्यो यो वात्सल्यादिगुणान् सदा ।
वात्सल्यादिनिधानाय श्रीरामाय नमोनमः ॥५३॥

जिन में ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य वीर्य एवं तेज परब्रह्मत्व सूचक गुण जो कि स्वाभाविक तथा निःसीम-सीमा रहित-अनन्त रूप से विद्यमान हैं एतादृश सभी गुणों के समुद्र श्रीरामचन्द्रजी को वार वार सादर दण्डवत प्रणाम है ॥५०॥

प्रकृति सम्बन्धी हेय गुणों से रहित होने से अगुण-निर्गुण रूपसे शास्त्रों में वर्णित एवं दिव्य अलौकिक अनन्त गुणों से युक्त है इसप्रकार शास्त्रों में सगुण तथा निर्गुण रूपसे निरूपित सर्वस्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को सतत नमस्कार है ॥५१॥

जो परेश श्रीरामजी अज्ञ जीवों के कल्याणार्थ ज्ञान दया दाक्षिण्य प्रभृति गुणों को सर्वदा धारण करते हैं एतादृश परम दयालु परमोकारक श्रीरामचन्द्रजी को सदा सादर दण्डवत प्रणाम है ॥५२॥

जो अपने आश्रित साधकों के लिये ही वात्सल्य

दधाति स्वाश्रितेभ्यश्च यस्तु शौर्यादिकान् गुणान् ।

श्रितारिशत्रवे तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥५४॥

धर्मार्थकाममोक्षाख्यचतुर्विधफलप्रदः ।

यस्तस्मै सर्वदात्रे च श्रीरामाय नमोनमः ॥५५॥

शास्त्रयोनिश्च सर्वज्ञः सर्वश्रुतिसमन्वितः ।

यश्चानन्दमयस्तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥५६॥

कारुण्य आदि अनेक गुणों को सदा धारण किया करते हैं उन वात्सल्य आदि गुणों के आदि कारण-खजाना स्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥५३॥

जो परमेश्वर श्रीरामजी अपने आश्रित जनों के वास्ते ही शौर्य धैर्य आदि गुणों को सर्वदा धारण करते हैं एतादृश शरणागत जनों के शत्रु के शत्रु अर्थात् शरणापन्न जीवों के परम संरक्षक श्रीरामचन्द्रजी को सदा नमस्कार है ॥५४॥

जो साधकों को उनकी इच्छा के अनुसार धर्म अर्थ काम एवं मोक्ष रूप चार प्रकार के फलों को प्रदान करने वाले हैं एतादृश सर्व फलों के प्रदाता श्रीरामजी को नमन है ॥५५॥

जिनके विषय में वेदादि शास्त्र ही प्रमाण हैं एवं जिनमें सभी शास्त्र समन्वित होते हैं और सर्वज्ञ हैं एतादृश

पञ्चधाऽवस्थितो रामः परव्यूहादिभेदतः ।

तस्मै पञ्चस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥५७॥

स परः परधामस्थः सर्वावतारकारणम् ।

तस्मै परस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥५८॥

दिव्यपरिकरायाथ दिव्यभूषणहेतवे ।

दिव्यदेहगुणायाथ श्रीरामाय नमोनमः ॥५९॥

सर्वानन्दमय उन श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥५६॥

परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी पर व्यूह विभव अन्तर्यामी एवं अर्चावतारों के भेद से पाँच प्रकार से स्थित हैं ऐसे लोकोपकारार्थ पाँच स्वरूप से रहनेवाले श्रीरामजी को सर्वतः नमस्कार है ॥५७॥

श्रीरामचन्द्रजी का परस्वरूप वह है जो सर्वापेक्षया परधाम दिव्यलोक श्रीसाकेत है उस में विराजमान हैं एवं "**सर्वेषामवताराणामवतारीरघूत्तमः**" इस आगम वचनानुसार सभी अवतारों के कारण हैं एतादृश परस्वरूप श्रीरामजी को अनेक वार सादर नमस्कार है ॥५८॥

जो दिव्यातिदिव्य परिकर वाले हैं एवं दिव्य आभूषणों वाले और दिव्य देह व दिव्य गुण वाले हैं एतादृश श्रीरामजी को सतत नमस्कार है ॥५९॥

श्रीसीतया हि युक्ताय नित्यमुक्तस्तुताय च ।
नित्यमुक्तैकभोग्याय श्रीरामाय नमोनमः॥६०॥
वेदवेद्यः परब्रह्म नित्यधामाधिनायकः ।
मुक्त प्राप्यश्च यस्तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥६१॥
सृष्ट्याद्यर्थं हि लोकानां स्वभक्तानुग्रहाय च ।
चतुर्व्यूहस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥६२॥
उद्भूतषड्गुणः पूर्णो व्यूहः शान्ताब्धिवद्धि यः ।
वासुदेवात्मने तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥६३॥

जो सर्वदा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी से युक्त ही रहते हैं और सर्वदा नित्य मुक्त जीवों से संस्तुत हैं एवं नित्यमुक्त जनों के एकमात्र भोग्य हैं ऐसे परपुरुष श्रीरामचन्द्रजी को सतत सतत नमन हो ॥६०॥

जो वेदों से ही जाने जाने वाले परब्रह्म हैं एवं नित्यधाम श्रीसाकेत के अधिनायक-सर्वे सर्वा स्वामी हैं और मुक्त साधक जनों से प्राप्य हैं एतादृश श्रीरामजी को नमस्कार है ॥६१॥

लोक-ब्रह्माण्डों की सृष्टि स्थिति एवं संहार तथा अपने भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये ही वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न एवं अनिरुद्ध रूप चार व्यूहों को धारण करनवाले व्यूहात्मा सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी को सदा नमस्कार है ॥६२॥

जो शान्त समुद्र के समान है एवं उत्पत्ति प्रत्य

व्यूहोयः कुरुते शास्त्र ज्ञानाद् बलाच्च संहृतिम् ।

सङ्कर्षणात्मने तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥६४॥

सृष्टिमैश्वर्यतो व्यूहो यो वीर्याद्धर्ममातनोत् ।

तस्मै प्रद्युम्नरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥६५॥

शक्त्या रक्षति यो व्यूहो ज्ञानं ददाति तेजसा ।

अनिरुद्धात्मने तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥६६॥

अगति गति विद्या अविद्या रूप छ गुणों या ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य वीर्य एवं तेज स्वरूप छओं गुणों से पूर्ण वासुदेव स्वरूप व्यूह के रूपमें प्रसिद्ध उन श्रीरामचन्द्रजी को सर्वदा नमस्कार है ॥६३॥

जो संकर्षणात्मक व्यूह से व्यक्त श्रीरामचन्द्रजी ज्ञानरूप ऐश्वर्य से शास्त्रादि एवं बल रूप ऐश्वर्य से संहार रूप कार्य को सम्पादन करते हैं ऐसे श्रीरामजी को अनन्त वार नमस्कार है ॥६४॥

जो प्रद्युम्न रूप व्यूह के रूपसे ऐश्वर्य शक्ति का समाश्रयण कर सृष्टि एवं वीर्य शक्ति के समाश्रयण से धर्म का विस्तार किये हैं एतादृश सर्वकार्य कारक श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥६५॥

जो अनिरुद्धात्मक व्यूह के स्वरूप में शक्ति रूप ऐश्वर्य के समाश्रयण से सभी की रक्षा करते हैं एवं तेज

एभ्योद्वादशसंख्याका व्यूहाश्च सम्भवन्ति हि ।
तत्तद्व्यूहस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥६७॥
चतुश्चक्रधरस्तत्र स्वर्णकान्तिर्हि केशवः ।
केशवव्यूहरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥६८॥
चतुः शङ्खधरः श्यामोव्यूहो नारायणः स्मृतः ।
नारायण स्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥६९॥
चतुर्गदाधरो व्यूहो मणिकान्तश्च माधवः ।
माधवव्यूहरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७०॥

रूप ऐश्वर्य के आश्रयण कर ज्ञान प्रदान करते हैं एतादृश श्रीरामजी को नमस्कार है ॥६६॥

इन्हीं ऊपर वर्णित चार व्यूहों से निम्न वर्णित वारह व्यूहों की उत्पत्ति होती है उन व्यूहों के स्वरूप में रहकर अलग अलग कार्यों को सम्पादन करने वाले श्रीरामचन्द्रजी को शतश प्रणाम है ॥६७॥

उन वारह व्यूहों में से श्रीकेशव नामक व्यूह सुवर्ण के समान कान्ति वाले एवं चारों हाथों में चार चक्र को धारण किये हैं एतादृश केशव रूप व्यूह वाले श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥६८॥

श्याम रंग वाले चार शंख को धारण किये श्रीनारायण नामक व्यूह हैं तादृश श्रीनारायण रूपवाले श्रीरामजी को वार वार नमस्कार है ॥६९॥

मणि के समान कान्ति वाले चार गदा को धारण

चतुः शाङ्र्गधरो व्यूहो गोविन्दश्च शशाङ्कवत् ।

गोविन्दव्यूहरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७१॥

पद्मकेसरवद्विष्णुश्चतुर्लाङ्गलधारकः ।

विष्णुव्यूहस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७२॥

चतुर्मुशलधर्त्ता हि पद्मवन्मधुसूदनः ।

मधुसूदनरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७३॥

चतुः खड्गधरो व्यूहो वह्निवद्धित्रिविक्रमः ।

त्रिविक्रमस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७४॥

किये श्रीमाधव नामवाले व्यूह हैं ऐसे माधव व्यूह स्वरूप वाले श्रीरामचन्द्रजी को शत शत नमन है ॥७०॥

शशांक-चन्द्रमा के समान कान्ति वाले चार शाड्र्ग को धारण किये श्रीगोविन्द नामक व्यूह हैं एतादृश गोविन्द रूप व्यूह वाले श्रीरामजी को नमन है ॥७१॥

कमल के केसर के समान वर्णवाले चार लांगल-हल को धारण किये श्रीविष्णु नामक व्यूह हैं तादृश श्रीविष्णु व्यूह रूपवाले श्रीरामजी को नमन है ॥७२॥

पद्म-कमल के वर्ण समान वर्ण वाले चार मुशल को धारण किये श्रीमधुसूदनजी हैं एतादृश श्रीमधुसूदन व्यूह वाले श्रीरामजी को नमन है ॥७३॥

वह्नि के समान वर्ण वाले चार खड्ग को धारण

चतुर्वज्रधरो व्यूहो वामनो बालसूर्यवत् ।

वामनव्यूहरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७५॥

चतुः पट्टिशधर्त्ता हि श्रीधरः पुण्डरीकवत् ।

श्रीधरव्यूहरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७६॥

विद्युत्कान्तिहृशीकेशश्चतुर्मुद्गरधारकः ।

हृशीकेशस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७७॥

पद्मायुधधरो व्यूहो पद्मनाभश्च सूर्यवत् ।

पद्मनाभस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७८॥

किये श्रीत्रिविक्रम नामक व्यूह हैं एतादृश त्रिविक्रम रूप व्यूह वाले श्रीरामजी को नमस्कार है ॥७४॥

बाल सूर्य के समान तेज वाले वज्र को धारण किये श्रीवामन रूप व्यूह हैं ऐसे श्रीवामन रूप व्यूह वाले श्रीरामजी को वार वार नमन है ॥७५॥

पुण्डरीक-कमल के समान वर्ण वाले एवं चार पट्टिश को धारण किये श्रीधर रूप व्यूह हैं तादृश श्रीधर रूप व्यूह वाले श्रीरामजी को नमन है ॥७६॥

विजली के समान कान्ति वाले चार मुद्गर धारण किये श्रीहृशीकेश रूप व्यूह हैं ऐसे हृशीकेश रूप व्यूह वाले श्रीरामचन्द्रजी को वार वार प्रणाम है ॥७७॥

सूर्य के समान कान्ति वाले शंख चक्र गदा धनुष

चतुः पाशधरो दामोदरश्चाथेन्द्रगोपवत् ।

दामोदरस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥७९॥

द्वादशादित्यदेवा हि चैते भालादिवृत्तयः ।

एतद्द्वादशरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥८०॥

तत्तद्देवादिरूपेण प्रादुर्भवति राघवः ।

तस्मै हि विभवाख्याय श्रीरामाय नमोनमः ॥८१॥

एवं खड्ग इन पाँच आयुधों को धारण किये श्रीपद्मनाभ नामक व्यूह हैं एतादृश पद्मनाभ रूप व्यूह वाले श्रीरामजी को नमन है ॥७८॥

इन्द्र गोप के समान वर्ण वाले चार पाश को धारण किये दामोदर नामक व्यूह हैं ऐसे दामोदर रूप व्यूह वाले श्रीरामचन्द्रजी को प्रणाम है ॥७९॥

ये ऊपर वर्णित वारह सूर्यदेव के समान वारह व्यूह देवता हैं जो श्रीरामचन्द्रजी के भाल आदि वारह स्थानों में सन्नियत रहते हैं एतादृश वारह व्यूह स्वरूप श्रीरामजी को सतत नमस्कार है ॥८०॥

समय समय पर मत्स्य कूर्म वराह नृसिंह आदि अनेक रूपों से श्रीराघवजी ही अवतरित होते हैं ऐसे विभव स्वरूप से प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥८१॥

शङ्खासुरमहन् रामो मत्स्यरूपं विधाय हि ।
तस्मै मत्स्यावताराय श्रीरामाय नमोनमः ॥८२॥
मन्दरं धृतवान् रामो कूर्मरूपं विधाय च ।
तस्मै कूर्मावताराय श्रीरामाय नमोनमः ॥८३॥
हतो वाराहरूपेण हिरण्याक्षश्च शार्ङ्गिणा ।
तस्मै वाराहरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥८४॥
हिरण्यकशिपुं चाहन् रामो नृसिंहरूपधृत् ।
तस्मै नृसिंहरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥८५॥

सर्वावतारी श्रीरामजी ने मत्स्य अवतार धारण करके शंखासुर का वध किया ऐसे श्रीरामचन्द्रजी को शतश प्रणाम है ॥८२॥

कूर्म रूप को धारण करके श्रीरामजी ने ही मन्दराचल को धारण किया एतादृश श्रीरामचन्द्रजी को सर्वतोभाव से नमस्कार है ॥८३॥

शारंग धनुष धारी श्रीरामजी ने ही वाराह रूप धारण करके हिरण्याक्ष नामक दैत्य का वध किया एतादृश वाराह रूपधारी श्रीरामचन्द्रजी को मैं सर्वतोभाव से प्रणाम करता हूँ ॥८४॥

श्रीनृसिंह का रूप धारण करके श्रीरामजी ने ही हिरण्यकशिपु का हनन किया ऐसे श्रीनृसिंह रूपवाले श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥८५॥

वामनरूपरामेण पातालं प्रापितो बलिः ।
तस्मै वामनरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥८६॥
अजयत् क्षत्रियान् रामः परशुरामरूपधृत् ।
तस्मै परशुरामाय श्रीरामाय नमोनमः ॥८७॥
दाशरथितया रामो रावणं हतवानिह ।
तस्मै श्रीरामरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥८८॥
वासुदेवतया रामः कंसादीनवधीत् खलु ।
तस्मै श्रीकृष्णरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥८९॥

सर्वावतारी श्रीरामजी ने ही श्रीवामन रूप धारण कर बलि को दमन कर पाताल पहूँचा दिया ऐसे श्रीरामचन्द्रजी को सादर प्रणाम है ॥८६॥

श्रीरामजी ने ही श्रीपरशुरामजी का रूप धारण कर सभी क्षत्रियों को जीत लिया ऐसे श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥८७॥

सर्वेश्वर श्रीरामजी ने ही श्रीदशरथजी के पुत्र रूपमें श्रीराम अवतार लेकर रावण को मारा ऐसे सर्व दमनशील श्रीरामरूप धारी परात्पर परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी को सर्वदा सादर दण्डवत प्रणाम है ॥८८॥

श्रीरामजी ने ही वसुदेवजी के पुत्र के रूपमें अवतरित होकर कंस शिशुपाल प्रभृति को मार दिया ऐसे श्रीकृष्ण रूप वाले श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥८९॥

रामेण बुद्धरूपेण विञ्चतास्तामसा जनाः ।
तस्मै बुद्धस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥९०॥
रामेण कल्किरूपेण शासिताः कलिशासकाः ।
तस्मै कल्किस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः॥९१॥
रामो विभवरूपाणि बहूनि धृतवानिह ।
सर्वविभवरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥९२॥
हेतुरिच्छावतारे साधुत्राणादित्रयं फलम् ।
सर्वावतारिरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥९३॥

श्रीरामजी ने ही बुद्धरूप धारणकर तामस वृत्तिवाले जनों को वञ्चित किया एतादृश श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥९०॥

श्रीरामजी ने ही श्रीकल्कि रूप से कलियुगी दुष्ट शासकों को शासित किया ऐसे सर्व शासक कल्कि रूपवाले श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥९१॥

पूर्वोक्त प्रकार से समय समय पर सर्वावतारी श्रीरामचन्द्रजी ने बहुत से विभव रूपों को धारण किया ऐसे अनन्त रूपधारी सभी विभव स्वरूप वाले श्रीरामजी को अनन्त वार नमस्कार है ॥९२॥

सर्वावतारी श्रीरामजी के अवतार का फल साधुओं की रक्षा दुष्ट कर्म वालों का नाश एवं धर्म का संस्थापन है एवं अवतार का कारण श्रीरामचन्द्रजी की इच्छा है एतादृश सर्वावतारी स्वरूप श्रीरामजी को प्रणाम है ॥९३॥

प्रविश्यान्तर्नियन्तृत्वं रामान्तर्यामिता मता ।
अन्तर्यामिस्वरूपाय श्रीरामाय नमोनमः ॥९४॥
अङ्गीकृत्य तनुत्वेन हेमादिकं हि राघवः ।
भवत्यर्चातनुस्तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥९५॥
अमोघदर्शनो यश्च ह्यमोघस्तवनोऽपि यः ।
यश्चामोघार्चनस्तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥९६॥

प्रत्येक जीवों के अन्तर प्रविष्ट होकर सभी को नियन्त्रण करते हैं अतः श्रीरामजी सर्वान्तर्यामी के रूपमें सभी शास्त्रों में प्रतिपादित हैं एतादृश अन्तर्यामी के रूपमें सर्वत्र विद्यमान श्रीरामचन्द्रजी को सर्वतोभाव से सर्वदा प्रणाम है ॥९४॥

सर्वेश श्रीराघवजी ही सुवर्ण रजत प्रस्तर आदि शरीरों को धारण कर अर्चाविग्रह के रूपसे प्रसिद्ध होते हैं एतादृश भक्ताभिष्ट फलप्रद अर्चाविग्रह वाले श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥९५॥

जिन श्रीरामचन्द्रजी का दर्शन अमोघ-कभी व्यर्थ नहीं जाता अवश्य ही साधक के इच्छानुसार फल देता ही है एवं जिनके स्तोत्रों तथा चरित्रों का पाठ-स्तवन भी अमोघ है अवश्य ही फल प्राप्त होता ही है तथैव जिनकी अर्चना-सेवा पूजा अचूक रूपसे फलों को प्रदान करनेवाली है ऐसे सर्व फलप्रद श्रीरामजी को सर्वदा सादर दण्डवत प्रणाम है ॥९६॥

सुलभो राघवो मूर्त्तौ सन्निधानादिहेतुतः ।
तस्मै चार्चावताराय श्रीरामाय नमोनमः ॥९७॥
तुष्यति मेधया यो न तपसा नो न कर्मणा ।
भक्त्यैव तुष्यते तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥९८॥
भक्त्या योऽथ प्रपत्त्या च सन्तोषितो मुमुक्षुभिः ।
मोक्षप्रदायकस्तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥९९॥
यश्च सकृत् प्रपत्त्यैव सर्वेभ्यश्चाभयप्रदः ।
तस्मै श्रेष्ठशरण्याय श्रीरामाय नमोनमः ॥१००॥

साधकों के सर्वदा सन्निकट होने के कारण सर्वेश्वर श्रीराघवजी अर्चाविग्रह में सभी के लिये सदा सुलभ रहते हैं ऐसे अर्चाविग्रह वाले श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥९७॥

जो श्रीरामजी मेधा-विशेष बुद्धिशाली होने से तुष्ट या प्राप्त नहीं होते हैं एवं तप से भी प्राप्त नहीं होते तथैव केवल कर्म से भी तुष्ट प्रसन्न या प्राप्त नहीं होते पर केवल अनन्या भक्ति से ही तुष्ट-प्रसन्न होते हैं एतादृश प्रपत्ति से प्राप्य श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥९८॥

साधक मुमुक्षु जनों से भक्ति अथवा प्रपत्ति से समाराधित होने पर सायुज्य मुक्ति प्रदान करनेवाले सर्वाभय प्रद श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है ॥९९॥

जो साधकों के एक वार के प्रपत्ति स्वीकार करने से सभी को सर्वदा के लिये सभी भूतों से अभय प्रदान

सम्प्राप्य राघवं मुक्तो जीवो नावर्त्तते पुनः ।
हारिणे सर्वभीतीनां श्रीरामाय नमोनमः ॥१०१॥
बोधायन प्रशिष्येण सदानन्देन धीमता ।
बोधायनमहावृत्तिमनुसृत्य कृतः स्तवः ॥१०२॥

करनेवाले हैं जिनकी प्रतिज्ञा ही "सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम" अर्थात् जो मानव एव वार हे राम ? मैं आपके शरण में हूँ मैं आपका हूँ अतः मेरी रक्षा करें इसप्रकार याचना करता है उसे मैं सभी भूतों से अभय करदेता हूँ यह मेरा व्रत है, एतादृश सर्वश्रेष्ठ शरण्य सभी को अभय प्रदान करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी को वार वार नमस्कार है ॥१००॥

साधक जीवात्मा सर्वशरण्य श्रीराघवजी को प्राप्त जीवात्मा-मुक्तजीव पुनः इस संसार में वापस नहीं आता है. एतादृश साधक सभी जीवों के भीती-संसार क्लेशों को सदा के लिये हरण करनेब्वाले श्रीरामचन्द्रजी को सदा सादर दण्डवत प्रणाम है ॥१०१॥

श्रीबोधायन महर्षि के प्रशिष्य जगद्गुरु श्रीगंगाधराचार्यजी के शिष्य धीमान् श्रीसदानन्दाचार्यजी ने श्रीबोधायनमहावृत्ति के सिद्धान्तानुसार इस वेदान्तसारस्तव को वनाया ॥१०२॥

स्तवमनुत्तमं चेमं वेदान्तसारनामकम् ।
श्रद्धया यः पठेत् तस्य श्रीरामः सुखदोभवेत् ॥१०३॥

यह वेदान्तसार नामक अति उत्तम स्तव को जो साधक श्रद्धा से पाठ करे उसे सर्वेश्वर श्रीरामजी सुख प्रदान करें ॥१०३॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

प्रणीत प्रकाश

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐

जगद्गुरु श्रीसदानन्दाचार्य जी